१

चन्द्रशेखरतोऽस्य प्रारम्भः ॥

1

चन्द्रशेखरस्तोत्रम्ः

ओं गणेशाय नमः ॥ रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनम् ॥ सिंजिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकं क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशाधिपैरभिवन्दितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष मां चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ॥१॥ पंचपादपपुष्पगन्धपदाम्बुजद्वयशोभितं भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम् ॥ भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष मां चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ॥२॥ मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं पंकजासनपद्मलोचनपूजितांघ्रिसरोरुहं ॥ देवसिन्धुतरङ्गशीकरसिक्तशुभ्रजटाधरं चन्द्रशेख

॥१॥ ॥१॥

ति वै यमः॥ चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष मां चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर
पाहि माम्॥५॥ पन्नराज मस्तकं भगाङ्गहरं भुजंगविभूषणं शैलराजसुतापरिष्कृतचारु
वामकलेवरम्॥ क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं चन्द्रशेखरमाश्रये
मम किंकरिष्यति वै यमः॥ चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष मां
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्॥६॥ भक्तवत्सलमर्चितं विमलं छ
विं हरिदम्बरं सर्वभूतपतेः पतिं परमोपमेयमनोहरम्॥ सोमवारराभूकृताशनं सु
धापानमयाकृतिं चन्द्र [illegible] शेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ चन्द्रशेखर
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष मां चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्॥७॥

रमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।। चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमां चन्द्र
शेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ।। ३ ।। भेषजं भवरोगिणामखिलापदामप
हारिणं दक्षयज्ञविनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनं ।। भुक्तिमुक्तिफलप्रदं सकला
घसंघनिवर्हणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।। चन्द्रशेखर चन्द्रशेख
र चन्द्रशेखर रक्षमां चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ।। ४ ।। कुण्ड
लीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरैः स्तुतिवैभवं भुवनेश्वरम्
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्य